विचार बिन्दु

ख्याति की अभिलाषा वह पोषक है जिसे ज्ञानी भी सबसे अंत में उतारते हैं।
–कहावत

राजनीतिक व्यवस्था का बदला रूप हताश करता है!

जब से समझने लगा हूं यही देखा है कि राजनीतिक दल चुनाव के समय जागते हैं, सक्रिय होते हैं और चुनाव परिणाम आते ही अगले चुनाव तक के लिए गहरी नींद में सो जाते हैं। देश के गणतंत्र बनने के बाद के प्रारंभिक वर्षों में एक ही दल –कॉंग्रेस–का वर्चस्व रहा, उसके सामने कोई बड़ी चुनौती थी भी नहीं इसलिए यह चलता भी रहा। लेकिन आहिस्ता–आहिस्ता कॉंग्रेस की चमक कम हुई और उसके विरुद्ध अन्य दल मज़बूत हुए तो उन्होंने अपनी सामर्थ्य का प्रदर्शन करने और देश की राजनीति में अपनी स्वीकार्यता बढ़ाने के लिए इस व्यवस्था से किनारा किया। परिणामत: कॉंग्रेस को भी अपने आलस्य का परित्याग करना पड़ा। लेकिन बहुत सक्रिय वह फिर भी नहीं हुई। जैसे उसके मन में यह बात थी कि जनता चुनेगी तो हमको ही, फिर काहे को मेहनत की जाए। लेकिन जनता ने उसकी उम्मीदों को नकारना शुरु किया और अलग–अलग दलों ने यह दिखाना शुरु किया कि वे कॉंग्रेस का विकल्प बन कर सत्ता की बागडोर थाम सकते हैं। एक समय देश में ग़ैर कॉंग्रेसवाद की हवा बहुत तेज़ी से चली, और उसके बाद क्रमश: कॉंग्रेस कमज़ोर होती गई। इसके पीछे बहुत सारे कारण थे।

देश के राजनीतिक परिदृश्य पर एक बहुत बड़ा बदलाव आया सन् 2014 में, जब भाजपा सत्ता में आई और नरेंद्र मोदी इस देश के प्रधानमंत्री बने। मोदी जी ने जैसे देश की राजनीतिक संस्कृति को आमूल चूल बदल डाला। उनके सत्ता में आने के बाद भाजपा में जैसे नई शक्ति का संचार हुआ। भाजपा हर वक़्त चुनावी मोड में रहने लगी। इसके मूल में ख़ुद प्रधानमंत्री जी थे जो हर समय, हर जगह चुनावी मोड और मूड में ही नज़र आने लगे। उनसे पहले जो लोग सत्ता में थे वे प्रशासन और राजनीति में अंतर करते थे और राजनीतिक बात केवल राजनीतिक मंचों पर ही करते थे। मोदी जी ने इस अंतर को अनदेखा किया और देश–विदेश में हर जगह, औपचारिक अनौपचारिक, राजनीतिक, प्रशासनिक, अकादमिक, आधिकारिक आदि हर अवसर पर राजनीतिक बात करने और यह बात करके अपने दल को लाभ पहुंचाने में कोई संकोच नहीं किया। इससे देश की राजनीतिक संस्कृति में एक बड़ा बदलाव आया। अन्य दलों को भी, चाहे उनकी हैसियत कैसी भी हो, अपना आलस्य त्याग कर पहले से अधिक सक्रिय होना पड़ा।

लेकिन बदलाव केवल इतना ही नहीं आया। इस नए सत्ता तंत्र ने अन्य बहुत सारी चीज़ों को भी बदल डाला। आज़ादी के बाद लम्बे समय तक सत्ता में रही कॉंग्रेस ने अपने दल के लिए जितना नहीं किया, उतना, बल्कि उससे बहुत अधिक बहुत अल्प समय में अब कर दिया गया। भाजपा के अनगिनत चकाचक नए दफ़्तर बन गए। भाजपा को मिलने वाले चंदे की तो जैसे बाढ़ ही आ गई। और जब पैसा आया तो उसका उपयोग भी हुआ। केवल पैसे का ही नहीं, सत्ता का भी उपयोग हुआ। कभी शरद जोशी ने लिखा था, इस देश में जो भी होता है अंतत: कॉंग्रेस होता है। तो कॉंग्रेस की सारी बुराइयां भाजपा ने बढ़ा–चढ़ाकर अपना ली। सत्ता के पास उपकृत करने और दंडित करने के हज़ार तरीके होते हैं। और अगर आप औचित्य अनौचित्य की दुविधा से मुक्त हो जाएं तो फिर कहना ही क्या! बहुत तेज़ी से मीडिया को काबू में किया गया। यही देखें कि संसद में दी गई एक जानकारी के अनुसार, पिछले लगभग पांच सालों में सरकारी विज्ञापनों पर 4607 करोड़ रुपये खर्च किए गए हैं। आईटी सेल की सक्रियता ने सत्तारूढ़ दल का पक्ष प्रचारित करने और विपक्षियों की छवि को धूमिल करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। प्रयास अन्य दलों ने भी किया, लेकिन उनके पास इतने विपुल साधन तो पहले ही नहीं थे, और जो थे उन पर भी नियंत्रण के लगातार प्रयासों ने जैसे उनकी कमर तोड़ कर रख दी। मीडिया को इस तरह साधा गया कि वह दिन–रात सत्तारूढ़ दल का गुणगान करने लगा और उसने जनता को यह समझाने में काफी हद तक सफलता भी प्राप्त की कि सत्तारूढ़ लोग नायक हैं और बाकी सब खलनायक। मीडिया का इस्तेमाल पहले की सरकारों ने भी किया था। एक समय वह था जब मज़ाक में यह कहा जाता था कि सरकारी दूरदर्शन पर केवल दो स्त्रियों का कब्ज़ा है– लता मंगेशकर और इंदिरा गांधी। तब केवल सरकारी दूरदर्शन ही था। लेकिन अब न केवल सरकारी दूरदर्शन, निजी टीवी चैनलों और मुद्रण माध्यमों को भी पूरी तरह नियंत्रित कर लिया गया है। एक और बड़ा अंतर यह है कि अपने खराब कार्यकाल में श्रीमती इंदिरा गांधी ने मीडिया को केवल इतना नियंत्रित किया कि वह उनके खिलाफ मुंह न खोले, लेकिन उन्होंने विपक्षियों की छवि पर प्रहार करने का प्रयास नहीं किया। अब तो सच और झूठ के बीच की दीवार को ध्वस्त कर दिया गया है और बिना इस बात की परवाह किए कि जो कहा जा रहा है तथ्य उसके विपरीत हैं, खूब ज़ोर–शोर से वह सब कहा जाता है जो सत्ता पक्ष के अनुकूल और प्रतिपक्ष के प्रतिकूल होता है। हम जैसे पिछली पीढ़ी के लोग जिनके त्याग और बलिदान के कामों से अभिभूत थे, उनकी छवि को बहुत कौशलपूर्वक ध्वस्त किया गया है और उनकी जगह अपने नायकों को स्थापित करने के खुले प्रयास किए गए हैं। कभी सुभाष चंद्र बोस तो कभी सरदार पटेल का नाम लेकर नेहरु को छोटा करने के प्रयास निरंतर चलते रहते हैं। उनकी तस्वीरों का ग़लत परिचय देकर उनकी छवि को विकृत करने के प्रयास अनवरत होते हैं। बख़्शा गांधी को भी नहीं जाता है। बार–बार यह कहा जाता है कि सत्तर बरसों में यह नहीं हुआ, वह नहीं हुआ, और यह कहने में ही इतना फुटेज खा लिया जाता है कि ख़ुद इन्होंने अपने कार्यकाल में क्या किया, यह बताने का अवकाश ही नहीं बचता है। यह मज़ाक आम है कि 1964 में दिवंगत हुए जवाहर लाल नेहरु वर्तमान सरकार को काम नहीं करने दे रहे हैं। अपनी हर नाकामयाबी का ठीकरा बेझिझक नेहरु के सर फोड़ा जाता है। जहां तथ्य पोल खोल सकते थे वहां तथ्यों की व्यवस्था को ही बदल डाला, ताकि न रहे बांस और न बजे बांसुरी। सूचना के अधिकार को लुंज–पुंज बना डाला गया।

> **सत्ता के पास उपकृत करने और दंडित करने के हज़ार तरीके होते हैं। और अगर आप औचित्य अनौचित्य की दुविधा से मुक्त हो जाएं तो फिर कहना ही क्या! बहुत तेज़ी से मीडिया को काबू में किया गया। यही देखें कि संसद में दी गई एक जानकारी के अनुसार, पिछले लगभग पांच सालों में सरकारी विज्ञापनों पर 4607 करोड़ रुपये खर्च किए गए हैं।**

ऐसे बहुत सारे बदलावों का लाभ सत्तारूढ़ दल को मिला है। वह मज़बूत और शक्तिमान हुआ है। बाबा तुलसीदास के कथन 'नहिकोउ अस जनमेहुं जग माहीं/ प्रभुता पाहिजाहि मद नाहीं' को चरितार्थ करने में उसने कोई कसर नहीं छोड़ी है। आज उसका स्वर जनता की सेवा का कम और उस पर कृपा करने के अहंकार का अधिक है। उसके नेतागण समय–समय पर जिस तरह की भाषा का प्रयोग करते हैं और जिसके लिए वे कभी लज्जित नहीं होते हैं, यह उसी अहंकार की परिणति है। सत्तारूढ़ दल ने एक और चमत्कार किया है, और यह चमत्कार है असल मुद्दों से ध्यान हटाकर निरर्थक बल्कि बेहूदा मुद्दों पर ध्यान केंद्रित कर देने का। जनता को रोज़गार चाहिए, महंगाई से मुक्ति चाहिए, सस्ती शिक्षा और आसानी से सुलभ चिकित्सा सुविधा चाहिए, सुगम नागरिक जीवन चाहिए, महिलाओं के लिए सुरक्षित परिवेश चाहिए, संवेदनशील शासन चाहिए, बच्चों और बुज़ुर्गों के लिए अतिरिक्त सुविधाएं चाहिए, परिवहन के पर्याप्त साधन चाहिए, इस बात पर भरोसा चाहिए कि नागरिकजो टैक्स चुकाता है उसके बहुलांश का प्रयोग उसी के हित में हो रहा है, जनता का सम्मान करने और उसकी बाद सुनने वाला प्रशासन और जनता की आकांक्षाओं का खयाल करने वाले जन प्रतिनिधि चाहिए, जन सुविधाओं का विस्तार चाहिए.... और ऐसी ही अनेक अपेक्षाएं किसी भी जनतंत्र के नागरिक करते हैं। लेकिन उन्हें मिलता क्या है? भटकाने और ध्यान बांटने वाले नारे और मुद्दे, जैसे– छद्म धर्मनिरपेक्षता, हिंदू ख़तरे में है, बंटोगे तो कटोगे, शाहज़ादे, पप्पू, सत्तर साल, मुफ़्तखोरी, विश्व गुरु, दुनिया में बजता भारत का डंका वगैरह, और अगर कोई सवाल कर ले या असहमत हो जाए तो तुरंत गद्दार या अर्बन नक्सल होने का तमगा या फिर पाकिस्तान का हवाई टिकिट, क्योंकि अब दिल्ली में चुनाव होने वाले हैं तो एक नया शगूफ़ा छोड़ दिया गया है– शीश महल। याद आता है एक फ़िल्मी संवाद, चिनॉय सेठ, जिनके अपने घर शीशे के हों वे दूसरों के घरों पर पत्थर नहीं फेंका करते। पता नहीं हमारे शासक किस तरह के सामान्य आवास में रहते हैं कि वे यह कहने का साहस जुटा लेते हैं! मैं कहीं पढ़ रहा था कि पीएम आवास मात्र 2700 करोड़ की लागत से बना है। क्या हमारी जनता को केवल इस आधार पर किसी को चुनना है कि वह कैसे आवास में रह रहा है? क्या इस तरह की चर्चाएं महज़ इसलिए की जाती हैं कि हमारे पास न तो जन कल्याण के लिए किए गए अपने कामों की कोई प्रभावशाली सूची है और न कोई ठोस योजना। वादे तो पहले भी किए गए थे, उनमें से कुछ को जुमला कह कर नकार दिया गया तो कुछ के लिए कोई न कोई बहाना बना दिया गया। अब जब यह लगने लगा है कि झूठे वादे काम नहीं आएंगे तो इस तरह की निरर्थक बातों का सहारा लिया जाने लगा है।

हमारी राजनीतिक व्यवस्था का यह बदला रूप हताश करता है!

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

समाज सुधारक, कर्मयोगी व सभी वर्गों के चहेते स्वामी विवेकानंद

डॉ. जे.के. गर्ग

स्वामी जी ने कहा कि जीवन में हमारे चारो ओर घटने वाली छोटी या बड़ी, सकारात्मक या नकारात्मक सभी घटनायें हमें अपनी असीम शक्ति को प्रकट करने का अवसर प्रदान करती है। स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था जिसके जीवन में ध्येय या संकल्प नहीं है तो ऐसा आदमी खेलती, गाती, हँसती, बोलती लाश ही है। जब तक व्यक्ति अपने जीवन के विशिष्ट मैकाले द्वारा प्रतिपादित और उस समय प्रचलित अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था के स्वामी विवेकानन्दजी घोर रोधी थे क्योंकि इस शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ बाबुओं की संख्या बढ़ाना था। वह ऐसी शिक्षा चाहते थे जिससे बालक का सर्वांगीण विकास हो सके। बालक की शिक्षा का उद्देश्य उसको आत्मनिर्भर बनाकर अपने पैरों पर खड़ा करना है। स्वामी जी के अनुसार अनुशासन का अर्थ है आत्मा द्वारा निर्दिष्ट होना। विद्यालय अनुशासन का हमारी दृष्टि से यह अर्थ होना चाहिए कि अध्यापक और बच्चे सभी अपने प्राकृतिक स्व पर नियंत्रण कर सकें, सामाजिक नियम एवं आदर्शों के अनुकूल आचरण करने के लिए अन्दर से प्रेरित हों और आत्मा की अनुभूति करने के लिए निरंतर अग्रसर रहें। स्वामी जी ने दुनिया के सामने जो वेदांत दर्शन रखा वो वाकई धर्म की सही विवेचना करता है। स्वामी विवेकानंद कहते थे कि वेदांत ही सिखाता है कि कैसे धार्मिक विचारों की विविधता को स्वीकार करना चाहिए। हिंदू धर्म पर स्वामी विवेकानंद ने कहा कि हिंदू धर्म का असली संदेश लोगों को अलग–अलग धर्म संप्रदायों के खांचों में बांटना नहीं, बल्कि पूरी मानवता को एक सूत्र में पिरोना है। स्वामी विवेकानन्द मानते थे कि अध्यात्म–विद्या और भारतीय दर्शन के ज्ञान के बिना विश्व अनाथ हो जायेगा। अपने अमेरिका प्रवास के समय वे अमेरिका में संगठित कार्य से किये गये कामों के फलस्वरूप चमत्कारिक परिणामों से स्वामी जी अत्यंत प्रभावित हुए थे। उन्होंने ठान लिया था कि उन्हें भारत में भी इस संगठन कौशल को पुनर्जीवित करना है। इसलिए विवेकानंद ने रामकृष्ण मिशन की स्थापना कर सन्यासियों तक को संगठित कर उन्हें समायोचित उत्तम कार्य करने का प्रशिक्षण दिया था। अमेरिका से लौटने पर स्वामीजी ने भारतीयों से नये स्फूर्ति पूर्व भारत के निर्माण हेतु आव्हान किया। भारत की जनता भी स्वामीजी के आव्हान पर अपने उत्थान हेतु गर्व के साथ निकल पड़ी।

स्वामी जी का मानना था देश के सभी नागरिकों को धर्म नहीं रोटी चाहिए। स्वामी ने संदेश दिया कि पूरब की दुनिया की सबसे बड़ी जरूरत धर्म से जुड़ी हुई नहीं है। उनके पास धर्म की कमी नहीं है, लेकिन भारत के लाखों पीड़ित जनता अपने सूखे हुए गले से जिस चीज के लिए बार–बार गुहार लगा रही है वो रोटी है। वो हमसे रोटी मांगते हैं, लेकिन हम उन्हें पत्थर पकड़ा देते हैं। भूख से मरती जनता को धर्म का उपदेश देना उसका अपमान है।

सच्चाई तो यह ही है कि स्वामी जी कभी भी किसी धर्म की उपेक्षा नहीं की थी, वो तो सभी धर्मों संप्रदायों का सम्मान करते थे। एक बार अंग्रेजों ने भारतीय परिधान पर व्यंग्य करते हुए कहा था कि आपकी वेशभूषा बहुत असभ्य हैं। इस पर स्वामी विवेकानंद जी ने कहा, आपकी संस्कृति में, कपड़ों से आदमी की पहचान होती है लेकिन हमारी संस्कृति में कपड़ों से नहीं वरन चरित्र से व्यक्ति की पहचान होती है। ठीक ऐसा धर्म के मामले में भी है। एक हिंदू को मुसलमान नहीं बनना चाहिये और ना ही मुसलमान को हिन्दू। एक इसाई को हिंदू या बोद्ध नहीं बनना चहिए और न ही किसी हिंदू या बौद्ध को इसाई बनना चाहिए। लेकिन प्रत्येक को दूसरे धर्म का सम्मान अवश्य करना चाहिए। स्वामीजी की शिष्या अमेरीका की लेखक लिसा मिलर 'वी आर आल हिन्दूज नाऊ' शीर्षक के लेख में बताती है–वैदऋग सबसे प्राचीन ग्रंथ कहता है कि सत्य एक ही है।

जहाँ विवेकानंद जी की धर्म संसद विश्व धर्म संसद थी वहीं दूसरी तरफ हाल में हरिद्वार और रायपुर में आयोजित धर्म संसद वैश्विक नहीं थी। यहां तथाकथित संतों और धर्मान्धता से ग्रसित लोगों ने जहर उगला और केवल हत्या घृणा और नरसंहार की बातें कीं। महात्मा गांधी की निंदा करते हुए उनके हत्यारे की प्रशंसा की गई। एक वक्ता ने कहा कि उन्होंने देश के एक पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के सीने में रिवॉल्वर खाली कर उनको मार डालने की लज्जाजनक बात की क्योंकि उन्होंने 2006 में कहा था कि देश के संसाधनों पर पहला हक अल्पसंख्यकों का है। हरिद्वार और रायपुर के भाषणों की निंदा केवल इसलिए ही नहीं की जानी चाहिए क्योंकि वे वैमनस्य पैदा करते हैं। वे वैमनस्य तो पैदा करते ही हैं, लेकिन साथ ही मौलिक तौर पर विवेकानंद द्वारा स्थापित हिंदुत्व का विरोध करते हैं। इन तथाकथित संतों का हिंदुत्व स्वामी विवेकानंद के हिन्दुत्त्व से बिलकुल भिन्न है। अब तो ऐसा मालूम होता है कि वास्तव के अंदर हिंदू और हिन्दुत्व अलग–अलग ही है।

विभिन्न समुदायों के बीच अविश्वास वैमनस्यता के बजाय उनके बीच प्रेम विश्वास को मजबूत बना कर ही हम देश को मजबूत बना सकते हैं। स्वामी जी कहते थे कि आर्थिक समृद्धि की नींव सामाजिक पूंजी है जो विश्वास और सामाजिक सद्भाव पर बनती है। वर्तमान मान के शासक कटेगे तो मरोगे और एक रहोगे तो नेक बनोगे का नारा देकर भारतियों को बाटने का घ्रणित काम करके खुद को हिदुत्व का ठेकेदार बतलाने की कोशिस करके लोगो को विश्व गुरु बनाने का झूठा सपना दिखा कर बेवकूफ बनाने का प्रयास करते हैं।

इतिहास साक्षी है कि युग प्रवर्तक और मनुष्य का जीवन काल साधारणत: अल्पकालीन ही होता है, ऐसे ही युग प्रवर्तकों में स्वामी विवेकानंद जी भी थे। विवेकानन्द जी के शिष्यों के अनुसार जीवन के अन्तिम दिन यानि 4 जुलाई 1902 को भी उन्होंने अपनी ध्यान करने की दिनचर्या को नहीं बदला था, उन्होंने उस दिन घंटों तक ध्यान किया और ध्यानावस्था में ही अपने ब्रह्मरन्ध्र को भेद कर महासमाधि ले ली। बेलूर में गंगा तट पर चंदन की चिता पर उनकी अंत्येष्टि की गयी। उनके शिष्यों और अनुयायियों ने उनकी स्मृति में वहाँ एक मन्दिर बनवाया और समूचे विश्व में विवेकानंद तथा उनके गुरु रामकृष्ण के सन्देशों के प्रचार के लिये 130 से अधिक केन्द्रों की स्थापना की। समय के साथ यह बात सही साबित हो गई है कि स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर आज तक के राष्ट्र निर्माण के समस्त प्रयत्नों में स्वामी जी के कार्यों और शिक्षाओं का अमूल्य योगदान रहा है और आगे भी रहेगा।

भारत के अध्यात्म, धर्म, दर्शन और सांस्कृतिक गौरव को विश्व में प्रतिष्ठित करते हुए मानवता के कल्याण और राष्ट्र पुनरुत्थान के प्रति जीवन समर्पित कर देने वाले प्रेरक स्वामी जी का जीवन व ओजस्वी संदेश आज भी हमे जीवन का सही दिशा में मार्ग प्रशस्त करता है। विडम्बना है कि जहाँ विवेकानंद जी की धर्म संसद विश्व धर्म संसद थी वहीं दुसरी तरफ हाल में हरिद्वार और रायपुर में आयोजित धर्म संसद वैश्विक नहीं थी।

परम पूज्य स्वामी जी के 162वें जन्म दिन के पावन अवसर पर हम सभी को उनके द्वारा बताये गये मार्ग का अनुसरण करने का संकल्प लेना चाहिये। स्वामी विवेकानंद जी की जन्मतिथि को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में हमारे देश में मनाया जाता है। स्वामीजी सैकड़ो सालों से हमारे लिये लिए प्रेरणा का स्त्रोत रहे हैं और आगे भी रहेंगे।

–डॉ. जे के. गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक कॉलेज शिक्षा, जयपुर

वन विभाग की 1305 बीघा भूमि फर्जी तरीके से बेचने का मामला सामने आया

बीकानेर, (निसं)। छत्तरगढ़ के चक 6 डीएलएम में वन विभाग की 80 बीघा जमीन हड़पने का मामला सामने आया है। वर्ष 2016 में तत्कालीन उपखंड अधिकारी के एक आदेश की आड़ में वन विभाग को आवंटित 1125 बीघा जमीन में से 80 बीघा को अराजीराज किया। इसमें से 40 बीघा जमीन एक किसान को बेच डाली। उसके बाद बची 40 बीघा भी बेचने की तैयारी चल रही थी। उसी दौरान जमीन घोटाले उजागर होने से अफसर डर गए।

हैरत की बात ये है कि नामांतरण संख्या 153 से 40 बीघा जमीन राजस्व रिकॉर्ड में पोर्टल पर ऑनलाइन तो नजर आ रही है, लेकिन उसके दस्तावेज गायब हैं। गड़बड़झाला इतना है कि जिस जमीन को कमांड बताकर बेचा गया वह जमाबंदी में अनकमांड है। बताया जा रहा है कि पास ही नहर की दामोलाई माइनर है, जिसका पानी जमीन में लगता है। वहां जमीनों की कीमत करीब तीन से चार लाख रुपए बीघा है। इस हिसाब से 2 करोड़ 40 लाख रुपए कीमत की जमीन को लेकर हेराफेरी वन विभाग की जांच में सामने आई है।

जानकारी के अनुसार उपनिवेशन विभाग ने 1983 में एक परिपत्र जारी कर शर्त लगा दी थी कि जमीन कमांड होने पर वन विभाग का आवंटन निरस्त समझा जाएगा। इसके आधार पर दोहरे आवंटन मामलों का निस्तारण करने की आड़ में वन विभाग की जमीनें बेच दी गईं, जबकि 1980 में फॉरेस्ट कंजरवेशन एक्ट प्रभावी होने के कारण यह शर्त 2012 में उपनिवेशन ने ही प्रत्याहारित कर ली थी। जानकारी के अनुसार राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955 के तहत वन विभाग की जमीन किसी को आवंटित नहीं की जा सकती।

राजस्थान राइजिंग ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट में इस बार सबसे ज्यादा निवेश सौर ऊर्जा के क्षेत्र में हो रहा है। 26 लाख करोड़ के प्रस्ताव केवल ऊर्जा क्षेत्र के लिए हैं। इनमें 20 हजार करोड़ से अधिक का निवेश केवल बीकानेर जिले में होगा। इसे देखते हुए पूगल, छत्तरगढ़, खाजूवाला, कोलायत, लूणकरणसर आदि क्षेत्रों में जमीनों की खरीद–फरोख्त बड़े पैमाने पर हो रही है। गौरतलब है कि पूगल और छत्तरगढ़ में 169 बीघा जमीन फर्जी तरीके से सोलर कंपनियों को बेच दी गई थी। इसे देखते हुए इस बार भी फर्जी आवंटन की संभावनाओं से इंकार नहीं किया जा सकता। छत्तरगढ़, पूगल, खाजूवाला में सोलर कंपनियों के आने से जमीनों के भाव आसमान छूने लगे हैं। इसकी आड़ में सरकारी और वन विभाग की जमीन को बेचने का गोरखधंधा उजागर हुआ। सभी गड़बड़ियां प्रशासन गांव के संग शिविर के दौरान हुईं। इसे लेकर पुलिस थानों और एसीबी में अब तक मुकदमे चल रहे हैं। दो आरएएस अधिकारी, तीन तहसीलदार सहित 34 अधिकारियों और कर्मचारियों को पिछले साल निलंबित किया जा चुका है।

> ■ **पूगल, छत्तरगढ़, खाजूवाला, कोलायत, लूणकरणसर आदि क्षेत्रों में जमीनों की खरीद-फरोख्त बड़े पैमाने पर हो रही है**

वन विभाग की खाजूवाला बॉर्डर पर चक 4 पीडब्ल्यूएम में 865 बीघा, छत्तरगढ़ के चक 2 डीएलएम में 270 बीघा, चक 1 आरएसएम में 90 बीघा और 6 डीएलएम में 80 बीघा भूमि का फर्जी आवंटन हुआ है। कुल मिलाकर 1305 बीघा भूमि का फर्जी आवंटन हुआ है। खाजूवाला के चक 4 पीडब्ल्यूएम में 1978 में वन विभाग को 4250 बीघा जमीन चारागाह विकास के लिए दी गई थी। इसमें से 865 बीघा जमीन 2020 से 2024 के बीच निजी खातेदारों के नाम पर राजस्व रिकॉर्ड में दर्ज कर दी गई। बाकी 3385 बीघा जमीन अभी भी अराजीराज है। छत्तरगढ़ के चक 2 डीएलएम में वन विभाग की 1200 बीघा जमीन को अराजीराज घोषित कर दिया। इसमें से 270 बीघा का आवंटन काश्तकारों को कर दिया गया। जांच कमेटी ने आवंटन गलत माना, लेकिन जमीन अब तक वन विभाग के रिकॉर्ड में नहीं चढ़ाई है। चक 1 आरएसएम में 1600 बीघा में से 90 बीघा का फर्जी आवंटन किया गया था। यह जमीन न्यायिक प्रक्रिया से वापस वन विभाग नाम करनी है, लेकिन छत्तरगढ़ तहसील में मामला ठंडे बस्ते में डाल दिया गया है।

वीरभद्र मिश्र, डीएफओ छत्तरगढ़ ने बताया कि रेंज अधिकारी वन बंदोबस्त डॉ. योगेन्द्र सिंह राठौड़ ने इन गड़बड़ियों की जांच की थी। जिला कलेक्टर को सभी दस्तावेज सौंप दिए गए हैं। निजी खातेदारों को आवंटित जमीन निरस्त करवाने के लिए विधिक प्रक्रिया अपनाई जाएगी।

कमलेश सिंह, तहसीलदार, खाजूवाला का कहना है कि खाजूवाला बॉर्डर पर चक 4 पीडब्ल्यूएम में वन विभाग की जमीन रिकॉर्ड ऑनलाइन होने पर अराजीराज हो गई थी। वन विभाग के नाम दर्ज नहीं हो सकी। अब कलेक्टर की अध्यक्षता में गठित कमेटी इसका नामांतरण करेगी। हमने प्रस्ताव भेज दिए हैं।

शीतलहर की चपेट में अजमेर, सड़कों पर घना कोहरा छाया

शीतलहर की चपेट के चलते घरों से बाहर निकलने पर लोगों की धूजणी छूट गई

अजमेर/सरवाड़, (कासं)। मौसम में हुए बदलाव के कारण शनिवार सुबह से शुरू हुई बारिश के बाद रविवार को दोपहर 11 बजे तक सड़कों पर घना कोहरा छाया रहा, तो वहीं बादलों की ओट में सूर्य की लुकाछुपी का खेल चलता रहा। शीतलहर की चपेट के चलते घरों से बाहर निकलने पर लोगों की धूजणी छूट गई। घना कोहरा होने से विजीबिलिटी कम होने से राहगीरों सहित वाहन चालकों को वाहन चलाने में परेशानी का सामना करना पड़ा।

रविवार अलसुबह से दोपहर साढ़े ग्यारह बजे तक सड़कों पर घना कोहरा छाया रहा। कोहरे से शहर की सड़कें दिखाई नहीं दे रही थी, जिससे आमजन सहित दुपहिया व चौपहिया वाहन चालकों को परेशानी का सामना करना पड़ा। वाहन चालक लाइट जलाते हुए धीरे–धीरे वाहन चल रहे थे। वहीं दोपहर बाद कोहरा छंटने पर चली सर्द हवाओं ने लोगों की धूजणी छुड़ा दी। लोगों घरों में दुबके नजर आए।

बढ़ती सर्दी से अभिभावकों की बढ़ी परेशानी :– रविवार को चली शीतलहर के चलते सोमवार को स्कूलों का समय 9 बजे बाद का होने पर भी अभिभावकों को अपने बच्चों को स्कूल भेजने में खासी परेशानी उठानी पड़ सकती है। खासकर उन अभिभावकों को जो अपने बच्चों को टू व्हीलर पर छोड़ने जाते हैं।

> ■ **घना कोहरा होने से विजीबिलिटी कम होने से राहगीरों सहित वाहन चालकों को वाहन चलाने में परेशानी का सामना करना पड़ा**

वर्तमान में कक्षा 1 से 12 तक सभी बच्चों की स्कूलें खुली हैं। ऐसे में छोटे बच्चों के स्वास्थ्य को लेकर भी अभिभावकों को चिंता सता रही है। मौसम विभाग के आगामी दिनों में भी सर्द को लेकर अलर्ट जारी किया है। बढ़ती सर्दी की मार दिहाड़ी मजदूरों पर पड़ी है। भवन निर्माण कार्यों पर जाने वाले मजदूरों की छुट्टी हो गई। मजदूर हाट बाजार में कोई ठेकेदार मजदूर लेने नहीं आया। निर्माण कार्य ठप्प हो गए। अजमेर के निकटस्थ पुष्कर तीर्थ क्ष ेत्र में भी पर्यटन प्रभावित रहा।

सरवाड़ में कोहरे के कारण जनजीवन अस्त-व्यस्त : शहर में चार दिन तक दिन के समय अच्छी धूप खिलाने के बाद मौसम ने करवट बदली। रविवार को शहर पूरे दिन कोहरे की आगोश में रहा। वहीं वाहन चालकों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा। अजमेर–कोटा मार्ग पर कोहरा छाया रहा। दोपहर बाद हल्की धूप निकली। वहीं शीतलहर का दौर जारी रहा। लोग कंपकंपाते नजर आए।

लोग सर्दी के बचाव के लिए जगह–जगह अलाव जलाकर तापते नजर आए। वहीं शीतलहर से तापमान में गिरावट हो गई। सड़कों पर अंधेरा सा छाया रहा। वहीं घरों से बाहर निकलने पर धूजणी छूटने लगी। दोपहर तक सूर्य के दर्शन नहीं हुए। वहीं लोग ऊनी कपड़े पहने नजर आए। ग्रामीणों ने बताया कि मावठ होने से रबी में बोई गई फसल सरसों गेहूं जो चना साहित अन्य फसलों में फायदा होगा एवं चने में लगने वाले उगटा रोग में भी कमी आएगी जिससे पैदावार में वृद्धि होगी।

राशिफल

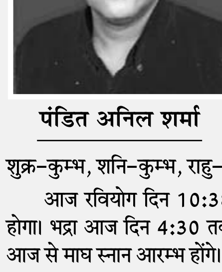

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 13 जनवरी, 2025

पौष मास, शुक्ल पक्ष, पूर्णिमा, सोमवार, विक्रम संवत 2081, आर्द्रा नक्षत्र दिन 10:38 तक, वैधृति योग नत्रि 4:39 तक, विष्टि करण सायं 4:30 तक, चन्द्रमा रात्रि 4:14 से कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–धनु, चन्द्रमा–मिथुन, मंगल–कर्क, बुध–धनु, गुरू–वृष, शुक्र–कुम्भ, शनि–कुम्भ, राहु–मीन, केतु–कन्या राशि में।

आज रवियोग दिन 10:38 तक रहेगा। कुमार योग रात्रि 3:51 से आरम्भ होगा। भद्रा आज दिन 4:30 तक रहेगी। आज पौषी पूर्णिमा, सत्य पूर्णिमा व्रत है। आज से माघ स्नान आरम्भ होंगे। आज वैधृति पूण्य, लोहड़ी उत्सव, भोगी उत्सव है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 8:40 तक, चर 9:58 से 11:17 तक, चर 1:54 से 3:12 तक, लाभ–अमृत 3:12 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 7:21, सूर्यास्त 5:49

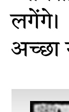

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

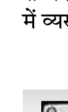

वृष
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आय में वृद्धि होगी और संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

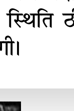

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना हो सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी।

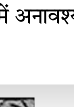

कर्क
व्यक्तिगत परेशानियों के कारण भागदौड़ रहेगी। अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। मन में असंतोष बना रहेगा। घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी।

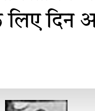

सिंह
आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बना रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

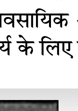

कन्या
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।

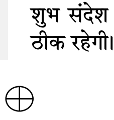

तुला
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। व्यावसायिक अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं।

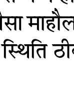

धनु
परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा।

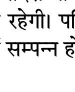

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

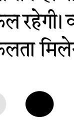

मीन
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।